International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2017; Page No. 85-87

नरेशमेह्ता का काव्य : आधुनिकताबोध

पी. तिरुपतम्मा

हिंदि विभाग, बी.सि.ए.स. कालेज, बापटला-522101, आंध्र प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

जीवन:

नरेश मेहता का जन्म् सन 1922 ई.में मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र के राजापूर कस्बे में हुआ। बनारस विश्वविद्यालय से आपने एम.ए किया। आपने आल इंडिया रेडियो इलहाबाद में कार्यक्रम अधिकारी के रूपा में कार्य किया। नरेश मेहता दूसरा सप्तक के प्रमुख कवि के रूप में प्रसिध्द हुए है। उनकी साहित्यिक सेवाओं केलिए 1992 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मनित किया गया।

साहित्य:

नरेश् मेह्ता ने आधुनिक कविता को नयी व्यंजना के साथ नया आयाम दिया। रागात्मकता, सम्वेदना और उदात्ता उनकी सर्जना के मूल तत्व है, जो उन्हे प्रक्रुति और समस्त सृष्टि के प्रति पर्युत्सुक बनाते है। आर्ष परम्परा और साहित्य को नरेश मेहता के काव्यों में नयी दृष्टि मिली। साथ ही प्रचलित साहित्यिक रुझाने से एक तरह की दूरी ने उनकी काव्य शैली और संरचना को विशिष्टता दी।

नरेश मेह्ता का चिंतन 1932 से लेकर अब तक निरंतर प्रवाह्मान रहा। इसी बीच साहित्यिक धरातल पर अनेक विचार उभरे और मिट गए। वे इन सभी विचारों से अवगत रहे। फिर भी वे किसी वाद में बंधकर अपने को सीमित नहीं किया। अतः खण्ड काव्यों के अंतर्गत आधुनिकता बोध के संबंध में उनके विचार पर दृष्टिपात् डालना उचित होगा---

आधुनिकताबोध:

आधुनिकता क अर्थ है – स्वचेतना, अर्थात अपने वातावरण और परिवेश के परिप्रेक्ष्य में अपने आप को देख्ना। स्वचेतना का बोध और सम्पर्क् वर्तमान का अर्थ है। आधुनिक व्यक्ति वर्तमान की चिंतना (बोध) के माध्यम से भविष्य को देखता है और रूपायित करता है। "आधुनिकता" आधुनिक की भाववाचक संज्ञाहै। आधुनिकता से अभिप्राय है – अपने चारों ओर के संश्लिष्ट (समन्वित) आधुनिक जीवन को नए ज्ञान विज्ञान के आलोक में देख्ना। आधुनिकता की परिभाषा देते हुए डा. रामेश्वरलाल खण्डेलवाल ने कहा कि- "आधुनिकता जीवन और जगत को कालबिंदु से देखने-समझने की एक भिन्न स्थिति या दृष्टि-भंगिमा है,जो मुख्यतः हमारे बौध्दिक धरातल से सम्बंधित रह्कर हमारे जीवन मूल्यों का निर्धारण वा जीवन प्रणाली का नियमन तथा रूपांकन करती है"।[1] आधुनिक भावबोध के विकास में वैज्ञानिक चिंतन एवं प्रगति तथा यदार्थ वादी दुष्टिकोण का विशिष्ट योगदान है। श्री अम्रुतराय ने मन के संस्कारों को प्रमुखता देते हुए कहा है। "मन की वह प्रव्रुत्ति को मध्ययुगीन रूढियों और अंधविश्वासों से नाता तोडकर आधुनिक ज्ञान के आलोक में, तर्क और विवेचन की कसौटी पेर जीवन के हर व्यापार को परखती है और स्वयं अपने विवेक से किसी निष्कर्ष पर पहूँचती है"।[2] आधुनिकता अपने परिवर्तित रूप में समसामयिकता के नाम से प्रसिध्द है। इस दृष्टि से आधुनिकता का अर्थ हैं वर्तमान युगबोध। इस रूप में वह अपनी दृष्टि वर्तमान पर केंद्रित रखती है तथ मुक्त जीवन एवं चाक्षुक यथार्थ बोध ही इसका प्रमुख लक्ष्य है। अतः आधुनिक मनुष्य को वर्तमान संदर्भ में अपने आप को संस्कार करने केलिए आवशयक भविष्योन्मुखी दृष्टि प्रदान करती है।

नरेश मेहता के काव्यों में आधुनिकताबोध के विभिन्न आयामों की स्पष्ट अभिव्यक्ति मिलती है। कवि के सृजनात्मकबोध ने सार्वभौम मानवीय दृष्टि को आत्मसात किया है, फलतः उनकी रचना की परिधि और अंदाज स्वाभाविक रूप से आधुनिकबोध से संपन्न हो गया है। कवि आधुनिकताबोध के विस्तार के मूल में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की प्राथमिकता और प्राबल्य को स्वीकार करते है। यह वैज्ञानिकवादी दुष्टिकोण निष्ठुर होकर सत्य को खोजने की व्याकुलता और इस खोज के क्रम में श्रध्दा-विशवास, परम्परा और धर्म किसी भी बाधा को सह्ने केलिए तैयार नहीं है। वैज्ञानिक दृष्टि तर्क की कसौटियों पेर विषय को कसकर स्वीकार करती है। इस कारण से उक्त अमूर्त आध्यात्मिक मूल्यों को वह सहज ही अस्वीकार कर देती है। "संशय की एक रात" में वैज्ञानिकता जनित आधुनिकता की अभिव्यक्ति मिलती है। काव्य में राम आस्था-अनास्था, विश्वास-अविश्वास, भ्रम एवं संशयग्रस्त आधुनिक प्रज्ञा के प्रतीक है। आज का मनुष्य इस्सी आधुनिकता से पीडित है। उनकी वैज्ञनिकता ने उन्हें किस्सी विषय के प्रति स्थिर विश्वास प्रदान नहीं किया है। हर विषय के प्रति तर्क-वितर्क करना उनका स्वभाव हो गया है अनिर्णय एवं दोहरे मानदण्डों का जीवन उनकी नियति है। राम आधुनिक मानव की भाँति कह्ने लगते है कि –

"दो सत्य
दो संकल्प
दो –दो आस्थाएँ
व्यक्ति में ही
अप्रामाणिक व्यक्ति पैदा हो रहा है।[3]

"महाप्रस्थान" में द्रौपदी आधुनिकता के प्रतीक है। वह आपने व्यक्तित्व का विश्लेषण युधिष्ठर के समक्ष में अत्यंत ईमानदारी से करती है –

"मैं इस हत भाग्यता का क्य करू महराज !
देह से मै तुम्हारे साथ चली आयी थी
परंतु मन
उन्ही हत्याओं, चीत्कारों, षड्यंत्रो
और कूटनीतियों के बीच
वैभव की जूठन बीनने में लग रहा।[4]

कवि आधुनिकता को गुणात्मक अवधारणा मानते है तथा समस्त समसामयिक विचारण एवं अभिव्यक्ति को आधुनिकता के रूप में स्वीकार करते है। उन्होंने दार्शनिकों और इतिहासकारों के आधुनिकता सम्बंधी दुष्टिकोण को स्वीकार किया है। कवि की यह विचारधारा हरिवंशराय "बच्चन" की विचारधारा से मिलती है। बच्चन दार्शनिकों और इतिहासकारों के आधुनिकता सम्बंधी दुष्टिकोण को इसप्रकार स्पष्ट करते है --- "दार्शनिकों की दृष्टि में यह कलागत अर्थो में समय की सतता की अवधारक है, जो भूत और भविष्य के मध्य पड्ता है और इतिहास्कारों केलिए समय का महज एक सुविधाप्रद विभाजन है"।[5] "संशया की एक रात" में कवि ने हनुमान की तार्किक दृष्टि के अंतर्गत इतिहास की दिशा एवं वर्तमान दशा पर अपना मत प्रस्तुत

किया है । हनुमान इसी तर्क दृष्टि के द्वारा समकालीन व्यक्ति के बोध को स्पष्ट करते हुए राम से कहते है कि-

"हम केवल घटना हैं ।
इतिहास नहीं
सम्भव है
हमारे कारण ही
अनागत युध्दों कीं नींव पडे
पर
इस डर से
क्या हम न्याय और अधिकार छोड दे ।
नहीं
नही महराज !
समय ही करेगा प्रतीकार
हर बार
अनुचित का"।[6]

कवि आधुनिकता के साथ् विद्रोह के सम्बंध को स्वीकार करते हैं । विद्रोह हिंदी साहित्य की एक प्रवृत्ति बनकर रही है ।यहाँ विद्रोह का अर्थ कुछ स्पष्ट कर लेना उचित होगा । डा. हरदयाल विद्रोह के अर्थ को इस प्रकार स्पष्ट करते है --- "विद्रोह से हम् समझते है कि –किसी व्यक्ति या व्यक्ति समूह के द्वारा किसी सत्ता, व्यवस्था,परम्परा, रूढि आदि का अस्वीकार और उसे व्यक्त करने का प्रयत्न ही विद्रोह है"।[7] "संशय की एक रात" में रावण की निरंकुश सत्ता को अस्वीकार करते हुए उसे समाप्त करने के प्रयत्न को विद्रोह माना गया है। अपनी स्वतंत्रता की रक्षा केलिए संघर्षे तथा विद्रोह का सहारा लेना एवं उन भावों को प्रकट करना आधुनिकता का ही प्रतिफलन है। ऐसी आधुनिकता के सम्बंध में हनुमान राम से यों कहते हैं---

"ओ
राघव !
ये लाघव
अब होंगे न पराभव
किस्सी शक्ति से !
हम साधरण जन
युध्द प्रिमी थे कभी नही
और न लंका युध्द लडेंगे
युध्दा भाव से।
महराज !
साम्राज्यवृत्ति के द्वारा
हम साधाराणजन
अर्थ सभ्य कर दिये गये"।[8]

राजनैतिक व्यवस्था भी विद्रोह का एक मुख्य क्षेत्र रहा है। हम अंग्रेजों के सम्पर्क के कारण आधुनिकबोध के सम्पर्क में आए। हमें हमारी पराधीनता अनुचित मालुम होने लगी । उस पराधीनता से मुक्त होने केलिए हम 1947 तक अंग्रेजों के खिलाफ लडे। हिंदि साहित्य में इस पराधीनता के विरुध्द चलानेवाले संघर्ष की अनुगूँज विभिन्न रूपों में हमें सुनाई देती है। "प्रार्थनापुरुष" में कवि ने अंग्रेजों के विरुध्द विद्रोही भाव प्रकट किया है। स्वदेश प्रेम, आत्मगौरव एवं् एक्य का नारा दिया -

"करो या मरो, देशवासियो !
यह समय का नारा
अंग्रेजों ! अब भारत छोडो
हिंदुस्थान ह्मारा !!"।[9]

"शबरी " में सामाजिक व्यवस्थाओं की मूढ्ता के प्रति तर्क के माध्यम से प्रकट किया गया है ---

"क्या आत्मा को उन्नति केवल
है उच्च वर्ग तक ही सीमित ?
प्रभु तो है सब के पिता, भला
उनका आराधना क्यों सीमित" ?[10]

व्यक्ति स्वातंत्रय चेतना आधुनिकता की प्रमुख बात रही है। आधुनिकता को वैयक्तिकतावादी दर्शन भी कहते हैं । अस्तित्ववादी चिंतन को उसके आत्म निष्ठ एवं व्यक्ति निष्ठ्ता का मूलाधार माना गया है। "महाप्रस्थान" में कवि आधुनिकता के इस व्यक्ति स्वातंत्रय की चेतना को राज्य व्यवस्थाओं के विवेचन के संदर्भ में प्रस्तुत किया है -

प्रत्येक व्यवस्था के पास
अपने बघनख होते है अर्जुन !
सुदूर भविष्य में
क्या यह नही सम्भव है कि
राज्य-व्यवस्था
समाज से स्वतंत्रचेता व्यक्ति को ही
या तो समाप्त कर दे
या उन्हें इतना विवश, पंगु बना दे कि
उनका अग्नि-व्यक्तित्व
राज्य-व्यवस्था की निरंकुशता को
कभी चुनौती ही न दे पाए ?" ।[11]

आधुनिकता का यदार्थ से गहारा सम्बंध है । परम्परागत यदार्थ अपने परिवेश और जीवन से एकदम अलग-अलग था । वहाँ यदार्थ भौतिक स्थूलता तथा आध्यात्म से जुड जाता था । आज का यदार्थ विज्ञांन से परिवेश को मथकर निकला गया सारभूत यदार्थ है । इसी का यह परिणाम है कि हर परिस्थिति, तथ्य अथवा तत्व को तर्क की कसौटी पर कसने से पूर्व प्रश्नाकुल मुद्रा में देख्नना आधुनिकता की एक महत्वपूर्ण भंगिमा है । कवि आधुनिकता के यदार्थ को स्वीकार करते है ।
"प्रवाद्पर्व" में जीवन के प्रति इस नवीन या यदार्थ् वादी दृष्टिकोण को राम के कर्म संबंधी चिंतन के माध्यम से व्यक्त किया गया है ---

"जीवन भर
एक प्रत्यंचा सा तना हुआ
कर्म के बाणों को वहन करने केलिए
पात्र या अपात्र
दिशा या अदिशा में संधान करने केलिए
केवल साधन है ?
मनुष्य
क्या केवल साधन है
क्या केवल माध्यम है ??"।[12]

इसतरह कवि जीवन के प्रति यदार्थ दृष्टिकोण को व्यक्तित्व और परिवेश के अंतर्विरोध का गहरे सम्वेदनात्मक स्थरों पर अनुभव करने लगा है । जीवन दृष्टि की नवीनता युग सापेक्ष्य है । अतः साहित्य के वह एक निरंतर विकासशील प्रक्रिया बनी रहती है । आधुनिकता के मूल में विघमान मानसिकता का इसी रूप में पोषण करती

हुई वह अपनी प्रासंगिकता को सिध्द करती है। यही उसकी उपलब्धि भी है और सार्थकता भी।

आधार तथा संदर्भ ग्रंथ

1. संभावना – अंक -2 – सं. रामेश्वर् लाल खण्डेलवाल - पृ.- 86
2. सहचिंतन –अम्रुत् राय – पृ - 31
3. संशय की एक रात – नरेश मेहता – पृ.—23
4. महाप्रस्तान – नरेश मेहता पृ. – 76
5. हिंदि कविता में विचार – बलदेव वंशी --- पृ. 2
6. संशय की एक रात -- नरेश मेह्ता - - पृ. 69
7. आधुनिकताबोध और विद्रोह ---डा. हरदायाल -- पृ. 9
8. संशय की एक रात – नरेश मेह्ता – पृ – 65
9. प्रार्थनापुरुष -- नरेश मेह्ता -- पृ. 55
10. शबारी -- नरेश मेहता --- पृ. 31
11. महाप्रस्थान --नरेश मेहता –- पृ. 108-109
12. प्रवाद्पर्व -- नरेश मेहता --पृ.19-20